

# डॉ. जेफरी हुडन, बाइबिल पुरातत्व, सत्र 10, बाइबिल बेथेल की पहचान, एक केस स्टडी

© जेफरी हुडन और टेड हिल्डेब्रांट

यह बाइबिल पुरातत्व पर अपने शिक्षण में डॉ. जेफरी हुडन हैं। यह सत्र 10 है, बाइबिल बेथेल की पहचान, एक केस स्टडी।

पुरातत्व का हिस्सा साइट की पहचान है, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है।

मैं पुराने नियम के प्रसिद्ध शहर बेथेल की साइट का उपयोग एक परीक्षण मामले के रूप में करना चाहता हूँ, जिसका उपयोग पुरातत्वविद् यह पता लगाने की कोशिश में करते हैं कि वास्तव में एक प्राचीन स्थल कहां था। तो, आइए बेथेल की साइट और उस साइट से जुड़े कुछ तर्कों पर नज़र डालें। यह फिर से वेस्ट बैंक का दृश्य है और बेथेल फिर से पठार में यरूशलेम के ठीक उत्तर में है जिसे सेंट्रल बेंजामिन पठार कहा जाता है, या उसके ठीक उत्तर में।

जैसा कि हम पवित्रशास्त्र से देखते हैं, बेथेल पुराने नियम में सबसे अधिक बार उल्लेखित स्थान है, लगभग 600 या 669 संदर्भों के साथ। अधिकांश विद्वान बेथेल को बेइटिन नामक स्थान पर रखते हैं, जो यरूशलेम से लगभग 10 मील उत्तर में एक अरब गांव है। यह रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण स्थल है क्योंकि यह एक प्रमुख चौराहे पर है।

चौराहा उत्तर और दक्षिण की ओर जाने वाले कुलपतियों का मार्ग है और अयालोन घाटी के साथ तट की ओर जाने वाला मार्ग है। इसमें एक अच्छा पानी देने वाला झरना भी है। पुराने नियम में, अब्राहम ने ए के पश्चिम में बेथेल के पूर्व की पहाड़ियों में एक वेदी बनाई और मिस्र के प्रवास के बाद उस स्थान पर लौट आया।

अधिक प्रसिद्ध रूप से, जैकब ने बेथेल में डेरा डाला और स्वर्ग में चढ़ते और उतरते स्वर्गदूतों के साथ एक सीढ़ी का सपना देखा। उन्होंने उस स्थान का नाम बेथ एल या भगवान का घर रखते हुए एक वेदी और स्तंभ बनवाया। और इसलिए, याकूब लौटता है, एक और वेदी बनाता है, और एक स्तंभ खड़ा करता है।

इसलिए, यहाँ कुलपतियों के प्रारंभिक काल में स्पष्ट रूप से प्रारंभिक धार्मिक सांस्कृतिक गतिविधि और स्मृति है। अब बेथेल स्लैश लूज़, दो अलग-अलग नाम, यहोशू 12:16 में एक राजा के साथ एक शाही कनानी शहर था जिसे इस्राएलियों ने स्पष्ट रूप से कब्जा कर लिया था। मूल रूप से बिन्यामीन को सौंपा गया, बेथेल न्यायाधीशों की अवधि के दौरान स्पष्ट रूप से एप्रैम के नियंत्रण में चला गया।

और यहां एक महत्वपूर्ण बात यह है कि बेथेल निपटान अवधि के दौरान एक अभयारण्य के रूप में कार्य करता था और उसके पास एक भविष्यवक्ता संघ था। तो, वहाँ स्पष्ट रूप से धार्मिक गतिविधि थी। यह एक धार्मिक स्थल था।

नाम और इतिहास, न्यायाधीशों के उस प्रारंभिक काल में भी इसका धार्मिक महत्व था। अब, जब इज़राइल और यहूदा के राज्य विभाजित हो गए, तो इज़राइल के पहले राजा यारोबाम ने बेथेल को उत्तरी राज्य के लिए एक प्रमुख धार्मिक केंद्र के रूप में स्थापित किया। और ये लगभग 930 ईसा पूर्व की बात है।

अब, उस फूट के बाद, इज़राइल और यहूदा दोनों एक-दूसरे से लड़े और सीमा आगे-पीछे हो गई। यही वह समय था जब राजशाही के शुरुआती दौर में अबिय्याह और आसा ने यहूदा के अधीन बेथेल पर कब्ज़ा कर लिया था। भविष्यवक्ता अमोस ने 8वीं शताब्दी में बेथेल मंदिर में अपनी भविष्यवाणियां कीं।

अंत में, राजा योशियाह के सुधार में ऊंचे स्थानों पर बेथेल के अभयारण्य का पूर्ण विनाश और अपवित्रता और उसके पुजारियों की हत्या शामिल थी। तो, बेथेल और लूज़ दो नामों के साथ क्या संबंध है? वैसे, यह 19वीं सदी के अरब गांव बेटिन की शुरुआती तस्वीर है। लूज़ को बादाम के पेड़ के रूप में वर्णित या परिभाषित किया गया है।

और जैकब ने इसका नाम बेथेल रख दिया। और पुराने नियम में नामों और साइटों और शहरों में फिर से अपडेट असामान्य नहीं हैं। मैं यहां कुछ उदाहरण देता हूं।

लेकिन इसका मतलब दो अलग-अलग साइटें भी हो सकता है। और यह महत्वपूर्ण भी है। और आप उत्पत्ति, यहोशू, न्यायाधीशों और जुबलीज़ की अपोकलिफ़ल पुस्तक में लूज़ का उल्लेख देख सकते हैं।

यहोशू 16:2 में लूज़ का उल्लेख एप्रैम और बिन्यामीन के सीमा विवरण में एक सीमा के रूप में किया गया है। तो, ऐसा प्रतीत होता है कि लूज़ बेथेल से अलग और अलग था। और हम उस पर बाद में गौर करेंगे।

ठीक है, सुलैमान की मृत्यु के बाद, जैसा कि हम जानते हैं, नए सुलैमान के बेटे, राजा रहूबियाम को 10 उत्तरी जनजातियों के आदिवासी बुजुर्गों ने एक बैठक के लिए शेकेम में मिलने के लिए कहा है। और, निस्संदेह, वे अनुरोध या मांग करते हैं कि कराधान और ताज के लिए काम करने के मामले में वह उन पर बोझ कम करें। और वह फिर से अपने युवा सलाहकारों से बुरी सलाह लेता है और ऐसी टिप्पणी करता है, आप जानते हैं, कि आपको लगता है कि मेरे पिता के अधीन यह कठिन था, मेरे अधीन यह और भी बुरा होने वाला है।

यही दो राज्यों के बीच अंतिम विच्छेद का कारण है, या इज़राइल के दो राज्यों में टूटने का कारण है, यहूदा, दक्षिणी दो जनजातियाँ, और फिर इज़राइल के अधीन उत्तरी 10 जनजातियाँ। यह उस समय था जब यारोबाम, जिसने उत्तरी राज्य का शासन संभाला था, ने पहचाना कि उसे एक समस्या है क्योंकि यहोवा का घर, यरूशलेम में मंदिर, सभी 12 जनजातियों के लिए एक एकीकृत धार्मिक स्थल बना हुआ है।

और वह यरूशलेम में, जो यहूदा में था, रह गया। इसलिए, यारोबाम को यरूशलेम और उसके राज्य के बीच इस संबंध को तोड़ने के लिए एक वैकल्पिक स्थल बनाना पड़ा। इसलिए उन्होंने

एक नहीं बल्कि दो धार्मिक स्थल विकसित किए, एक राज्य के सुदूर उत्तर में दान में और एक राज्य के बिल्कुल दक्षिणी भाग बेथेल में।

और बेथेल, निस्संदेह, अपने धार्मिक इतिहास, अपने नाम और इस तथ्य के कारण कि यह एक सांस्कृतिक केंद्र था, एक उत्कृष्ट विकल्प था। इस वजह से, उन्होंने प्रत्येक स्थान पर एक रखकर, दो सुनहरे बछड़े बनाए। और इन बछड़ों की आवश्यक रूप से पूजा नहीं की जाती थी।

अदृश्य यहोवा की पूजा की जाती थी जो कथित तौर पर इन बछड़ों पर सवार था। फिर, यह कनानी धर्म और बाइबिल आस्था के बीच एक समन्वय है। अब, बाइबिल के लेखक, बाइबिल में स्पष्ट रूप से, इन मंदिरों को यरूशलेम मंदिर के धार्मिक नकली के रूप में पहचानते हैं।

जैसा कि सामान्य है, इतिहासकार उनके अस्तित्व को भी स्वीकार नहीं करता है। यह पाठ है। इसलिए, राजा ने सलाह ली और सोने के दो बछड़े बनाये।

और उस ने लोगोंसे कहा, तुम को यरूशलेम को चढ़े बहुत दिन हो गए। हे इस्राएल, अपने देवताओं को देखो, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाए हैं। और उस ने एक को बेतेल में खड़ा किया, और दूसरे को दान में खड़ा किया।

इसलिये उस ने बेतेल में अपने बनाए हुए बछड़ोंको बलि किया, और जो ऊंचे स्थान उस ने बनवाए थे उनके याजकोंको बेतेल में रख दिया। वह उस वेदी के पास गया जो उसने बेतेल में बनाई थी। और आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को, जो उस ने अपने मन में ठाना था, उस ने इस्राएलियोंके लिये जेवनार की, और बलि चढ़ाने को वेदी पर चढ़ गया।

तो, यह, फिर से, यहूदा की सीमा पर एक वैकल्पिक मंदिर और पूजा स्थल था ताकि लोगों को यरूशलेम में मंदिर की तीर्थयात्रा करने से रोका जा सके। तो जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया था, इन बछड़ों की यह पूजा वास्तव में भगवान और कनानी धर्म की पूजा का मिश्रण थी। जो लोग भगवान के प्रति वफादारी बनाए रखते हैं वे कथित तौर पर इस बछड़े पर सवार एक अदृश्य भगवान की कल्पना करेंगे।

फिर से, कनानी लोगों के साथ, कनानी धार्मिक विचारों का मिश्रण या बस बछड़े की पूजा करना जैसा कि कनानी लोग करते थे। अब, आठवीं शताब्दी के दौरान, इन दोनों राज्यों की भू-राजनीतिक संरचना में बदलाव आया। वे एक साथ संबद्ध थे।

और वे दोनों समृद्ध थे, और उनका विस्तार हुआ। दक्षिण और पश्चिम में यहूदा, पूर्व और उत्तर में इस्राएल। और उन दोनों ने मिलकर सुलैमान के राज्य को निष्पक्ष रूप से, लगभग पुनः निर्मित या बराबर कर दिया।

और इसी समय यहूदा के तकोआ का एक नास्तिक आमोस बेतेल तक गया, और अपनी भविष्यवाणियां की। और, निःसंदेह, वह वहां लोकप्रिय या स्वीकार्य नहीं था। और आप अमज़ियाह, पुजारी को देख सकते हैं, यहाँ याह्विस्टिक नाम को देख सकते हैं, अमोस को उत्तर दे

रहे हैं, लेकिन बेथेल की फिर कभी भविष्यवाणी नहीं की क्योंकि यह राजा का अभयारण्य और राज्य का मंदिर है।

तो, आपको इस समय बेथेल के महत्व का स्पष्ट संकेत मिल गया है। राजा का अभयारण्य, राज्य का मंदिर। तो बेथेल कहाँ है? बेथेल की साइट कहाँ है? खैर, फिर से, अधिकांश विद्वान बेथेल की पहचान उस स्थल या अरब गांव बीटिन से करते हैं।

और ऐसा करने वाले पहले व्यक्ति फिर से ये ही थे, ये दो व्यक्ति, जिन्हें हमने पहले देखा है, एडवर्ड रॉबिन्सन और एली स्मिथ। और जब वे बेइटिन से आगे बढ़े तो उन्होंने पहचान लिया कि यह बेथेल नाम का एक अपभ्रंश, अरबी अपभ्रंश था। प्राचीन स्रोतों का उपयोग करते हुए, उस समय भी, यूसेबियस के ओनोमोस्टिकॉन, जिसने बाइबिल साइटों के बीच दूरी दी थी, फिर से चौथी शताब्दी ईस्वी में प्रकाशित हुई, उन्होंने माना कि बेइटिन को बाइबिल बेथेल का स्थल होना चाहिए।

इसके अलावा, पीईएफ, पश्चिमी फिलिस्तीन के सर्वेक्षण ने भी बेइटिन की साइट को बेथेल के रूप में मान्यता दी। फिर, नहीं, किसी भी प्रकार की पुरातात्विक गतिविधि अभी तक नहीं हुई है। और इसलिए कोंडोर और किचनर ने अपने कार्यकर्ताओं से इस क्षेत्र का सर्वेक्षण कराया और उन्होंने, फिर से, इस महत्व को पहचाना कि बेइटिन स्पष्ट रूप से बेथेल का स्थल था, नाम संरक्षण से, स्थलाकृतिक विचारों से।

बेइटिन की साइट को बेथेल के रूप में पुष्टि की। और हम उसे थोड़ा खोल देंगे। 1920, 1930 के दशक में, मेल्विन ग्रोव काइल, जो पिट्सबर्ग में वहां के मदरसे में पढ़ाते थे, ने बेइटिन में खुदाई शुरू की।

और, निस्संदेह, वह उस मंदिर की तलाश कर रहा था जिसे मैंने यारोबाम द्वारा बनाया था, यह देखने के लिए कि क्या उसे इसका कोई सबूत मिल सकता है। और काइल के साथ, अलब्राइट ने वहां उसके साथ काम किया। बाद में, काइल की मृत्यु के बाद, जेम्स केल्सो, जिन्होंने पिट्सबर्ग में काइल की कुर्सी संभाली, ने 1950 के दशक में अलब्राइट के साथ फिर से काम किया और बेथेल की फिर से खुदाई की।

हालाँकि, उस मंदिर का कोई सबूत सामने नहीं आया। अब, बेथेल में इस कार्य की उत्खनन पद्धति अच्छी नहीं थी। खराब रिकॉर्ड रखरखाव, खराब स्ट्रैटिग्राफिक नियंत्रण।

लेकिन इस तरह उन्होंने साइट के इतिहास की पुनर्व्याख्या की। लेकिन फिर भी, किसी भी प्रकार के मंदिर का कोई सबूत नहीं है। अभी हाल ही में, एक जापानी-फिलिस्तीनी अभियान बीटिन में काम कर रहा है, लेकिन ज्यादातर बाद के अवशेषों पर है।

वहाँ चालक दल की एक तस्वीर है. अब, बीटिन में पाए जाने वाले किसी भी प्रकार के ऊंचे स्थान की कमी पर इस चिंता के साथ, एक और मुद्दा बन रहा था। और मुद्दा था एआई की साइट का.

बेथेल के पूर्व में ऐ लॉन्ग की साइट को एट-टेल के रूप में मान्यता दी गई थी। लेकिन कई विद्वानों ने इस पर सवाल उठाया। एट-टेल की साइट को ऐ के रूप में प्रश्न करने पर बीटिन की साइट को बेथेल के रूप में भी पुनर्विचार के दायरे में रखा गया।

इसके खिलाफ लिखने वाला व्यक्ति डेविड लिविंगस्टन था, जिसका मानना था कि एट-टेल, क्योंकि इसमें जोशुआ के काल के अवशेष नहीं थे, ऐ की साइट नहीं थी। और इसलिए, उन्होंने खिरबेट निसा नामक एक अलग साइट को देखा, और इसके लिए बेथेल की साइट को बेइतिन से अल-बीरा नामक दूसरी साइट पर ले जाना आवश्यक हो गया। और इसलिए, उन्होंने अपने विचारों को वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल जर्नल में प्रकाशित किया और इसका जवाब इजरायली विद्वान एंसन राइनी ने दिया, जिन्होंने शातिर तरीके से, मैं उस शब्द को हल्के ढंग से उपयोग नहीं करता, लेकिन शातिर तरीके से लिविंगस्टन पर हमला किया और बेइतिन को बेथेल का उचित स्थान बनाने के लिए जोरदार तर्क दिया। .

और अधिकांश विद्वान, लगभग सभी विद्वान रेनी के पक्ष में थे कि बेइतिन को बाइबिल बेथेल होना चाहिए। अब, जबकि बेइतिन में खुदाई से किसी भी प्रकार के मंदिर या वेदी का पता नहीं चला, याद रखें कि यारोबाम ने दो मंदिर बनाए थे, एक दान में और एक बेथेल में। डैन में 1967 या 66 में शुरू हुई खुदाई, बल्कि बीरन, अब्राहम बीरन, इज़राइली खुदाई के तहत, एक सुंदर रूप से खंडहर, लेकिन खूबसूरती से संरक्षित मंदिर और ऊंचे स्थान को उजागर किया, जो स्पष्ट रूप से वही था जो बाइबिल में वर्णित है जैसा कि जेरोबाम द्वारा बनाया गया था।

और यहां एक कलाकार का पुनर्निर्माण है, मेरा मतलब है रिटमीयर का पुनर्निर्माण जो कि जैसा दिखता होगा। अब हम मानते हैं कि बेथेल संरचना इसके समान थी, वेदी और अभयारण्य और किनारे पर पुजारियों के लिए घर थे। लेकिन बेथेल वाला मंदिर फिर से शाही अभयारण्य और मुख्य मंदिर था, इसलिए बेथेल वाला मंदिर दान वाले मंदिर की तुलना में लगभग निश्चित रूप से अधिक विस्तृत और बड़ा होता।

डैन में जो हम यहां देख रहे हैं वह शायद आकार और चमक में कहीं अधिक मामूली था। अब हम इस बिंदु पर एक बहुत प्रसिद्ध इज़राइली भूगोलवेत्ता और मार्गदर्शक, ज़ेव विल्ने के पास आते हैं, आप वहां उनकी तारीखें देखेंगे, और उन्होंने कई वर्षों तक इज़राइल और फिलिस्तीन की खोज पर गाइडबुक और पर्यटक पुस्तकों की एक श्रृंखला लिखी और छात्रों को ले जाना पसंद किया। पर्यटक और इज़राइली और विदेशी सिर्फ भूमि की खोज के लिए भ्रमण पर निकलते हैं। और यह वह था जो बेथेल या बेथेन के आसपास के क्षेत्र में गया और अध्ययन किया और उसने देखा कि बेथेल या बेटिन के ठीक बगल में एक जगह थी जिसे जेबेल अरातास कहा जाता था और इसमें ऐसी विशेषताएं थीं जिनके बारे में उसने सोचा था कि यह यारोबाम के मंदिर और वेदी से संबंधित हो सकती है। जिसे 10वीं शताब्दी के अंत में बनाया गया था।

और विल्ने ने यह सुझाव दिया, किसी पुरातत्ववेत्ता ने नहीं, बल्कि केवल इस एक व्यक्ति ने। और यह जेबेल अरातास है और संभवतः उस पर्वत की चोटी पर ऊंचे स्थान का क्षेत्र है। यह बीटिन से केवल एक मील उत्तर में है और इसमें ऐसी विशेषताएं हैं जो यह संकेत दे सकती हैं कि यह न

केवल मंदिर और ऊंचे स्थान का वास्तविक स्थल था, बल्कि शायद वह जगह भी थी जहां जैकब ने मूल रूप से सपने देखे थे और भगवान के लिए अपना ऊंचा स्थान या वेदी बनाई थी। .

वहां से बहुत सुंदर दृश्य दिखता है. आप जॉर्डन घाटी, भूमध्यसागरीय तट देख सकते हैं, और यह एक तीर्थस्थल जैसी किसी चीज़ के निर्माण के लिए एक बहुत ही आदर्श स्थान है। और यहाँ कुछ तस्वीरें हैं.

फिर, अभी तक इसकी खुदाई नहीं की गई है, लेकिन आप इस शिखर के शीर्ष पर कुछ अवशेष देख सकते हैं। तथ्य यह है कि इस पर्वत की परिधि पर कई यहूदी नए नियम की कब्रें खोजी गई हैं, जिससे पता चलता है कि इसका कुछ प्रकार का धार्मिक महत्व या प्रकृति भी है। इसलिए ईसा के समय रहने वाले यहूदियों ने भी यह पहचान लिया होगा कि यह वास्तव में याकूब के साथ-साथ यारोबाम से संबंधित बेथेल का उच्च स्थान और धार्मिक स्थल था।

पहाड़ की चोटी पर कुछ दृश्य हैं और आप यहां मलबे के इस ढेर को देख सकते हैं और ऐसा माना जाता है कि शायद यह यारोबाम द्वारा निर्मित ऊंचे स्थान पर बने मंदिर के अवशेष हैं और शायद इज़राइल के बाद के राजाओं द्वारा इसका विस्तार और अलंकरण किया गया था। ठीक है, इसे संक्षेप में कहें तो, आपके पास यहां दो साइटें हैं। आपको बेटिन मिला है, जो बेथेल का प्राचीन शहर था, और फिर जेबेल अराटिस, ठीक उत्तर में अराटिस का पर्वत।

क्या यह लूज़ की साइट हो सकती है? और यहां इसकी स्पष्ट संभावना है। धार्मिक महत्व: हम वहां कुछ जानकारी सूचीबद्ध करते हैं जो इंगित करती है कि जेबेल अराटिस एक धार्मिक स्थल था। हमें एक क्रूसेडर महल, एक मुस्लिम मंदिर, नए नियम से यहूदी रॉक-कट कब्रें और एक ओक का पेड़ मिला है, जिसका धार्मिक महत्व है।

तो, ऐसा लगता है कि शायद यह प्राचीन काल में वहां हुई किसी महत्वपूर्ण धार्मिक घटना की ओर इशारा कर रहा है। ऊंचाई काफी ऊंची है, जहां से मनोरम दृश्य दिखते हैं। तो, यदि यह लूज़ की साइट है, तो यह संभवतः ऐसी साइट के लिए भी एक अच्छी जगह का संकेत देता है।

अब, पहचान. जेनेसिस और जोशुआ में बेथेल और लूज़ की साइटें अप्रभेद्य हैं लेकिन जोशुआ के एक अन्य पाठ में ये दो अलग-अलग साइटें प्रतीत होती हैं। और इसका एक स्पष्ट संकेत यहोशू 16:2 है जो एप्रैम और मनश्शे के बीच बेथेल से लूज़ तक जाने वाली दक्षिणी सीमा का वर्णन करता है।

तो, वायतज़ाह मिबेट एल लूज़ा और आपने ध्यान दिया कि लूज़ा का अंतिम शब्द लूज़ है जिसके अंत में एच या हे है। यह लूज़ की दिशा में एक दिशात्मक नमस्ते है। यदि हम इसे इसी तरह पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट रूप से दो साइटों को इंगित करता है।

तो, लूज़ जेबेल अरतिस या बेथेल का ऊँचा स्थान हो सकता है, कुछ हद तक गिबोन के ऊंचे स्थान से लेकर गिबोन शहर तक। अराटिस के अवशेषों से पता चलता है कि यह क्षेत्र लगभग 200 गुणा 100 मीटर था। तो यह बहुत बड़ा है और निश्चित रूप से एक बहुत विस्तृत मंदिर और ऊंचे स्थान के लिए पर्याप्त क्षेत्र है।

तो, यह देखने के लिए और आधुनिक विद्वानों के इतिहास में चल रहे तर्कों को देखने के लिए यह एक अच्छी साइट है कि यह साइट बेथेल थी या नहीं। और यहाँ खतरा यह है कि आप जो सोचते हैं वह बाइबिल की कथा के अनुरूप साक्ष्यों को फिट करने का प्रयास करें। और बेटिन, हर संभावित कारण से, बाइबिल आधारित बेथेल होना चाहिए।

इसे स्वीकार न करने का कोई कारण नहीं है. और फिर लूज़ बेथेल का ऊँचा स्थान या थोड़ा उत्तर में स्थित बेथेल का धार्मिक स्थल हो सकता है। धन्यवाद।

यह बाइबिल पुरातत्व पर अपने शिक्षण में डॉ. जेफरी हडॉन हैं। यह सत्र 10 है, बाइबिल बेथेल की पहचान, एक केस स्टडी।